विद्यार्थियों के लिए परीक्षा की दृष्टि से उपयोगी

वन लाइनर

कक्षा - 10वीं

सत्र 2025-26

लोक शिक्षण संचालनालय, भोपाल (म.प्र.)

संयोजन

श्रीमती राजेश्री शेन्डगें

अिसस्टेंट प्रोग्राम मैनेजर, स्टेट असेसमेंट सेल, लो.शि.सं. भोपाल

विषय समन्वयन एवं पुनरीक्षण

डॉ. मीनाक्षी दुबे

विषय विशेषज्ञ (हिन्दी), स्टेट असेसमेंट सेल

संकलनकर्ता

श्रीमती चित्रा पिल्लई (उ.श्रे.शि.), शास. सांदीपनी उ.मा.वि. निशातपुरा, भोपाल

श्रीमती रीना गुप्ता (मा.शि.), शा.उ.मा.वि. चूनाभट्‌टी, भोपाल

श्रीमती अरूणा नारोलिया (मा.शि.), शा. हाई स्कूल भानपुर, भोपाल

श्रीमती अपर्णा शर्मा (मा.शि), शा. हाई स्कूल नवीन छावनी, भोपाल

श्रीमती श्रद्धा पंथी (मा.शि.), शा.उ.मा.वि. छोला, भोपाल

श्रीमती सवीना परवीन (मा.शि.), शा.उ.मा.वि हमीदिया क्र.2, भोपाल

स्टेट असेसमेंट सेल, लोक शिक्षण संचालनालय, मध्यप्रदेश, भोपाल

वन लाइनर पाठ्यवस्तु संबंधी वीडियो, लिंक एवं क्यू.आर. कोड

क्र.	शीर्षक	लिंक	क्यू.आर. कोड
1.	क्षितिज भाग-2 काव्य खण्ड भाग-1	https://youtu.be/sDFzSdwCMVo?si=1xEs2jAIVUI4q8r8	
2.	क्षितिज भाग-2 काव्य खण्ड भाग-2	https://youtu.be/zTU4LIrXZFU?si=IpV1DSRnotjFn69Z	
3.	क्षितिज भाग-2 गद्य खण्ड	https://youtu.be/1r-nOAWvytE?si=LfwfWCHsmN7_Ygb-	
4	काव्य बोध	https://youtu.be/Tll6a3nNGkY?si=3tEWyeQp6NzC5A1M	
5.	भाषा बोध	https://youtu.be/SunrjQDGiN0?si=fEdqg-q3YqZAUi2o	
6.	कृतिका भाग- 2	https://youtu.be/jfluj6HONCc?si=5xDqM005l7ZaC5Nc	

क्षितिज भाग-2

पद्य-खण्ड

विषय-क्रम

स.क्र.	पाठ	कवि	काल
1	सूर के पद	सूरदास	भक्तिकाल
2	राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद	तुलसीदास	भक्तिकाल
3	आत्मकथा	जयशंकर प्रसाद	छायावाद
4	उत्साह, अट नहीं रही है	सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	छायावाद
5	यह दंतुरित मुसकान, फसल	नागार्जुन	प्रगतिवाद
6	संगतकार	मंगलेश डबराल	आधुनिक युग

क्षितिज भाग-2

पद्य-खण्ड

पाठ - 1
सूर के पद

- सूरदास का जन्म सन 1478 में हुआ था।
- सूरदास का जन्म मान्यता के अनुसार उनका जन्म स्थान दिल्ली के पास सीही में माना जाता है।
- **सूरदास के गुरु वल्लभाचार्य हैं। (2022) (2023) (2024)**
- सूरदास अष्टछाप के कवियों में सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं।
- सूरदास मथुरा और वृंदावन के बीच गऊ घाट पर रहते थे।
- सूरदास श्रीनाथ जी के मंदिर में भजन-कीर्तन करते थे।
- सूरदास का निधन सन् 1583 में पारसौली में हुआ था।
- सूरदास के तीन ग्रंथ हैं।
- सूरदास के तीनों ग्रंथों के नाम- 'सूरसागर', 'साहित्य लहरी', 'सूरसारावली' है।
- **सूरदास का 'सूरसागर' सर्वाधक लोकप्रिय है। (2022)**
- सूरदास 'वात्सल्य' और श्रृंगार के श्रेष्ठ कवि हैं।
- सूरदास कृष्ण के अनन्य भक्त थे।
- सूरदास की भाषा ब्रज है।
- सूरदास के पद लोकगीतों की परंपरा की श्रेष्ठ कड़ी हैं।
- सूरदास के 'पद' सूरसागर के भ्रमरगीत से चार पद लिए गए हैं।
- कृष्ण ने मथुरा जाकर कंस का वध किया।
- कृष्ण ने उद्धव के द्वारा गोपियों को समझाने योग संदेश भेजा।
- कृष्ण ने योग संदेश के माध्यम से गोपियों की विरह वेदना को शांत करने का प्रयास किया।
- गोपियों को उद्धव का शुष्क संदेश पसंद नहीं आया।
- योग-संदेश के समय भौंरा आ जाने से भ्रमर गीत का प्रारंभ हुआ।
- गोपियों ने भ्रमर के बहाने उद्धव पर व्यंग्य बाण छोड़े।
- गोपियों को योग संदेश कड़वी ककड़ी के समान लगता है।
- गोपियों ने उद्धव को राज धर्म याद दिलाया।
- राजा का धर्म प्रजा का हित करना है।

- गोपियों ने उद्धव को बड़भागी कहकर व्यंग्य किया।
- 'अपरस' का अर्थ अछूता है।
- 'पुरइनि पात' का अर्थ कमल का पत्ता है।
- **उद्धव के व्यवहार की तुलना 'तेल लगी गगरी', और 'कमल के पत्ते से' की गई है। (2022)**
- 'कमल के पत्ते' एवं 'तेल लगी गागरी' की विशेषता होती है कि दोनों पर पानी का प्रभाव नहीं होता।
- गोपियों ने कहा कि उद्धव अभी तुमने प्रेम रूपी नदी में अपने पैर भी नहीं डुबाये हैं।
- श्रीकृष्ण से अनन्य प्रेम कारण गोपियाँ स्वयं को भोली-भाली एवं अबला बता रही हैं।
- गोपियाँ कहतीं हैं कि जिस प्रकार चींटियाँ गुड़ से लिपटती हैं, उसी प्रकार हम भी कृष्ण के प्रेम में अनुरक्त हैं।
- 'मन की मन ही माँझ रही' का अर्थ है कि गोपियों के मन की बात मन में ही रह गयी।
- गोपियों को कृष्ण के वापस आने की आशा थी इसीलिए उन्होंने अपने तन व मन की व्यथा को सहा था।
- गोपियों की विरह अग्नि योग संदेश को सुनकर और बढ़ गई।
- 'मरजादा न लही' के माध्यम से प्रेम की मर्यादा की बात की जा रही है।
- 'हारिल' एक पक्षी है जो अपने पैरों में सदैव एक लकड़ी को पकड़े रहता है।
- गोपियों ने श्रीकृष्ण को मन, कर्म, वचन से अपने हदय में सदा के लिए वसा लिया है।
- गोपियाँ सोते-जागते-सपने में एवं दिन-रात कृष्ण के नाम का जाप करती रहती हैं।
- 'व्याधि' का अर्थ-रोग, पीड़ा पहुँचाने वाली वस्तु होता है।
- गोपियों ने योग संदेश उन्हीं को देने की बात कही है जिनके मन चंचल है एवं चकरी के समान है।
- गोपियों के अनुसार कृष्ण पहले से ही चतुर थे और मथुरा जाकर राजनीति का ग्रंथ पढ़ लिया है।
- गोपियाँ कहती हैं कि पहले के लोग भले एवं सज्जन होते थे जो दूसरों के हित के लिए घूमते-फिरते थे और एक कृष्ण हैं जो दूसरों का मन चोरी किये फिरते हैं।
- गोपियों के अनुसार राजा का धर्म है - प्रजा को सताया न जाए।
- गोपियाँ कृष्ण से अपना मन माँग रही हैं जो वे अपने साथ ले गये हैं।
- गोपियाँ तर्कपूर्ण ढंग से अपनी बात रखती थीं और किसी भी बात को कहने में हिचकती नहीं थीं।

सूरदास का भावपक्ष	कलापक्ष
• वात्सल्य और शृंगार रस का प्रयोग किया है। • सूरदास की भक्ति पुष्टिमार्गीय है।	• सूरदास जी के पदों में कोमलकांत पदावली है। • सूर की भाषा में संगीतात्मकता एवं सजीवता है।

पाठ - 2
राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद

कवि	काल	भाव-पक्ष	कला-पक्ष
• तुलसीदास जन्म- सन् 1532 मृत्यु- सन् 1623	• भक्तिकाल रामभक्ति शाखा	• आपका दृष्टिकोण अत्यंत व्यापक एवं समन्वयवादी है। • शांत रस प्रमुख है।	• भाषा-ब्रज एवं अवधी है। • सामाजिक चेतना का प्रसार।

- तुलसीदास का जन्म उत्तर प्रदेश के बाँदा जिले के राजापुर गाँव में हुआ।
- तुलसीदास को गुरुकृपा से रामभक्ति का मार्ग मिला।
- 'रामचरितमानस' तुलसीदास की प्रमुख रचना है।
- **तुलसीदास की अन्य रचनाएँ - 'कवितावली', 'गीतावली', 'दोहावली', 'कृष्णगीतावली' एवं 'विनयपत्रिका' हैं। (2023)**
- 'रामचरित मानस' अवधी भाषा में लिखा गया है।
- 'रामचरित मानस' का मुख्य छंद चौपाई एवं अन्य छंद दोहा, सोरठा आदि हैं।
- 'विनयपत्रिका' की रचना गेय पदों में हुई है।
- 'तुलसीदास' की रचनाएँ प्रबंध और मुक्तक दोनों प्रकार के काव्यों का उत्कृष्ट रूप है।
- 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' 'रामचरित मानस' के बालकांड से लिया गया है।
- राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद में वीर रस की प्रधानता है।
- सीता स्वयंवर में राम लक्ष्मण गुरु विश्वामित्र के साथ आए थे।
- परशुराम अपने गुरु शिव के धनुष के टूटने पर क्रोधित हो गए थे।
- 'भंजनिहारा' शब्द का अर्थ है तोड़ने वाला।
- शिव धनुष को तोड़ने वाला मेरे (परशुराम) लिए सहस्त्रबाहु के समान शत्रु है।
- लक्ष्मण ने व्यंग्य करते हुए कहा कि हमने बचपन में ऐसे कई धनुष तोड़े हैं, इस धनुष पर इतनी ममता क्यों ?
- राम स्वभाव से शांत एवं विनम्र थे।
- लक्ष्मण क्रोधी स्वभाव के थे।
- लक्ष्मण ने तर्क दिया कि शिव-धनुष पुराना था और राम के छूते ही टूट गया।
- परशुराम क्षत्रिय कुल के विरोधी हैं, उन्होंने कई बार इस पृथ्वी को क्षत्रियों से विहीन कर ब्राह्मणों को दान किया है।
- तुलसीदास के गुरु नरहरि दास थे।
- परशुराम के फरसे के डर से गर्भ में पल रहा शिशु भी मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।

- 'कुम्हड़बतिया' शब्द का अर्थ बहुत कमजोर, निर्बल व्यक्ति या कुम्हड़े का बहुत छोटा फल होता है।
- **लक्ष्मण के अनुसार वीर योद्धा स्वयं अपनी प्रशंसा नहीं करते एवं अपनी वीरता का प्रदर्शन युद्ध भूमि में करते हैं। (2022)**
- **विनयपत्रिका एवं कवितावली की रचना ब्रज भाषा में की गई है। (2023)**
- **'रिसाई' शब्द का अर्थ 'क्रोध' करना होता है। (2024)**
- **भगवान शंकर का धनुष राम ने तोड़ा। (2022)**

पाठ - 3
आत्मकथ्य

कवि	काल	भाव-पक्ष	कला-पक्ष
• जयशंकर प्रसाद जन्म- सन् 1889 मृत्यु- सन् 1937	• छायावाद के प्रवर्तक कवि	• कविताओं में दु:ख, आकुलता, उत्साह, प्रेम आदि भावों को बहुत सुन्दर ढंग से व्यक्त किया है।	• प्रकृति का मानवीकरण एवं शृंगार रस का प्रयोग।

- जयशंकर प्रसाद का जन्म वाराणसी में हुआ।
- जयशंकर प्रसाद की प्रमुख रचनाएँ 'चित्राधार', 'कानन-कुसुम', 'झरना', 'आँसू', 'लहर' और 'कामायनी' है।
- **जयशंकर प्रसाद की 'कामायनी' आधुनिक हिन्दी की श्रेष्ठतम काव्य-कृति है। (2023) (2024)**
- जयशंकर प्रसाद कवि के साथ-साथ गद्यकार भी थे। 'अजातशत्रु', 'चन्द्रगुप्त', 'स्कंदगुप्त', 'ध्रुवस्वामिनी' उनके नाटक हैं।
- प्रेमचंद के संपादन में हंस (पत्रिका) का प्रकाशन किया गया।
- कवि आत्मकथा लिखने से इसलिए बचना चाहता है कि उसकी आत्मकथा का उपहास न किया जाए।
- कवि कहता है कि हर भौंरा फूलों पर मंडराता हुआ, गुनगुनाता हुआ अपनी कुछ कहानी कहता है।
- कवि के अनुसार मुरझाकर गिर रही पत्तियाँ निराशा का प्रतीक हैं।
- कवि को अपनी आत्मकथा सुनाने में अभी 'समय नहीं हुआ है' क्योंकि कवि को अभी जीवन में कोई उपलब्धि प्राप्त नहीं हुई है।
- स्मृति पाथेय से कवि का आशय स्मृति रूपी संबल से है।
- कवि के आलिंगन में सुख आते-आते रह गया।
- 'प्रवंचना' शब्द का अर्थ-धोखा देना होता है।

पाठ-4
उत्साह, अट नहीं रही है।

कवि	काल	भाव-पक्ष	कला-पक्ष
• सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जन्म- सन् 1899 मृत्यू- सन् 1961	• छायावाद के प्रवर्तक कवि	• रूढ़ियों के विरोधी • वीर रस, ओज गुण की प्रधानता	• आपकी भाषा धारा प्रवाह शुद्ध खड़ी बोली है • मुक्त छंद का विकास हुआ है। • प्रकृति चित्रण।

- 'सूर्यकांत त्रिपाठी निराला' की प्रमुख रचनाएँ- 'अनामिका', 'परिमल', 'कुकुरमुत्ता' एवं 'नए पत्ते'।
- **'निराला रचनावली' के आठ खंडों में उनका संपूर्ण साहित्य प्रकाशित है। (2024)**
- 'उत्साह' बादलों को संबोधित करते हुए एक आह्वान गीत है।
- 'बादल' निराला का प्रिय विषय है।
- **'उत्साह' कविता में ललित कल्पना और क्रांति-चेतना दोनों हैं। क्रांति, उत्साह से आती है। (2023)**
- बादलों को नवजीवन वाले कहा गया है।
- **'अट नहीं रही है' कविता में फागुन मास (बसंतऋतु) की सुंदरता का वर्णन है। (2022)**
- बादल अज्ञात दिशा से आते हैं।
- अट नहीं रही है से आशय है कि फागुन की सुदंरता प्रकृति में समा नहीं रही है।
- विश्व के सभी जन गर्मी से व्याकुल हो रहे हैं।
- पत्तों से लदी डाल, कहीं लाल एवं कहीं हरी है।
- निराला ने बादलों की तुलना बालकों के घुँघराले बालों से की।
- बसंत ऋतु जब सांस लेती है तो सुगंध चारों ओर फैल जाती है।
- **'उत्साह' कविता में बादल हदय में उत्साह के संचार और संघर्ष के लिए प्रेरित करता है। (2024)**

पाठ- 5
यह दंतुरित मुस्कान, फसल

कवि	काल	भाव-पक्ष	कला-पक्ष (2023)
• नागार्जुन जन्म- सन् 1911 मृत्यु- सन् 1998	• प्रगतिवाद	• सामाजिक यथार्थ एवं प्रकृति चित्रण	• प्रगतिशील विचारधारा, सामाजिक व्यवस्था

- **नागार्जुन की प्रमुख काव्य कृतियाँ हैं- 'युगधारा', 'सतरंगे पंखों वाली', 'हजार-हजार बाहों वाली' (2024)**
- नागार्जुन की सम्पूर्ण रचनाएँ 'नागार्जुन रचनावली' के साथ खंडों में प्रकाशित हैं।
- मातृभाषा मैथिली में नागार्जुन 'यात्री' नाम से प्रतिष्ठित हैं।
- नागार्जुन को आधुनिक कबीर भी कहा जाता है।
- 'यह दंतुरित मुस्कान' कविता में छोटे बच्चे की मनोहारी मुस्कान का वर्णन है।
- कवि का मानना है कि बच्चे की मुस्कान की सुन्दरता में ही जीवन का संदेश है।
- दंतुरित मुस्कान की मोहकता तब और बढ़ और जाती है जब उसके साथ नजरों का बाँकपन जुड़ जाता है।
- फसल शब्द सुनते ही खेतों में लहलहाती फसल आँखों के सामने आ जाती है।
- **फसल ढेर सारी नदियों के पानी का जादू है, किसान के हाथों के स्पर्श की गरिमा है, कई खेतों की मिट्टी का गुण धर्म है। (2024)**
- दही, घी, शहद, जल और दूध के योग को पंचामृत कहते हैं।
- 'कनखी' का अर्थ तिरछी निगाह से देखना है।
- 'नागार्जुन' का मूल नाम 'वैद्यनाथ मिश्र' था।

पाठ- 6
संगतकार

कवि	काल	भाव-पक्ष	कला-पक्ष
• मंगलेश डबराल जन्म- सन् 1948 मृत्यु- सन् 2020	• आधुनिक युग	• सामाजिक और राजनीतिक जागरूकता • सामंती बोध एवं पूंजीवादी छल का प्रतिकार है	• प्रगतिशील विचारधारा, सामाजिक व्यवस्था • आधुनिक भाषा और विचारशीलता

- मंगलेश डबराल का जन्म टिहरी गढ़वाल (उत्तराखंड) के कालापानी गाँव में हुआ।
- मंगलेश डबराल भोपाल में भारत भवन से प्रकाशित होने वाले 'पूर्वाग्रह' में सहायक संपादक हुए।
- मंगलेश डबराल लखनऊ से प्रकाशित 'अमृत प्रभात' में भी नौकरी की।
- मंगलेश डबराल के चार कविता संग्रह प्रकाशित हुए- 'पहाड़ पर लालटेन', 'घर का रास्ता', 'हम जो देखते हैं', 'आवाज भी एक जगह' है।
- मंगलेश डबराल को साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।
- संगतकार कविता गायन में मुख्य गायक का साथ देने वाले संगतकार की भूमिका के महत्त्व पर विचार किया है।

- **मुख्य गायक की आवाज चट्टान जैसी भारी थी। (2023)**
- संगतकार की वह सुंदर, कमजोर काँपती हुई आवाज, शायद मुख्य गायक का छोटा भाई या शिष्य था।
- **संगतकार के माध्यम के कवि ने उन व्यक्तियों की ओर संकेत किया जो मुख्य गायक के गायन में उत्साह बढ़ाने का कार्य करते हैं। (2023)**
- सफलता के पास शिखर पर पहुँचने के दौरान यदि व्यक्ति लड़खड़ाता है, तब उसे सहयोगी हिम्मत, धैर्य एवं उत्साह बढ़ाकर सँभालता है।
- संगतकार मुख्य गायक के सुर में सुर मिलाकर उसे बुलंदी पर पहुँचाने में मदद करता है।
- ध्वनि मध्य सप्तक के ऊपर हो तो 'तार सप्तक' कहते हैं।
- संगतकार मुख्य गायक का ढाँढस बँधाने का कार्य करता है।

क्षितिज भाग-2

गद्य-खण्ड

विषय-क्रम

स.क्र.	पाठ का नाम	लेखक का नाम	विधा का नाम
1	नेताजी का चश्मा	स्वयं प्रकाश	कहानी
2	बालगोबिन भगत	रामवृक्ष बेनीपुरी	रेखाचित्र
3	लखनवी अंदाज	यशपाल	व्यंग्य
4	एक कहानी यह भी	मन्नू भंडारी	आत्मकथा
5	नौबतखाने में इबादत	यतींद्र मिश्र	व्यक्ति चित्र
6	संस्कृति	भदंत आनंद कौसल्यायन	निबन्ध

गद्य-खण्ड

पाठ - 1
नेताजी का चश्मा लेखक- स्वयं प्रकाश

- स्वयं प्रकाश का जन्म सन् 1947 में इन्दौर (मध्य प्रदेश) में हुआ।
- स्वयं प्रकाश ने मैकेनिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई करके एक औद्योगिक प्रतिष्ठान में नौकरी की।
- स्वयं प्रकाश ने 'वसुधा' पत्रिका का संपादन कार्य किया।
- स्वयं प्रकाश आठवें दशक में उभरे हुए समकालीन कहानी के महत्व महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं।
- स्वयं प्रकाश के तेरह कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।
- 'सूरज कब निकलेगा', 'आएँगे अच्छे दिन भी', 'आदमी जात का आदमी' और 'संधान' आदि स्वयं प्रकाश की उल्लेखनीय रचनाएँ हैं।
- स्वयं प्रकाश के चर्चित उपन्यास 'बीच में विनय' और 'ईंधन ' है।
- स्वयं प्रकाश को पहल सम्मान, वनमाली पुरस्कार, राजस्थान साहित्य अकादमी पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया है।
- स्वयं प्रकाश का निधन सन् 2019 में हुआ।
- स्वयं प्रकाश मध्यमवर्गीय जीवन के कुशल चितेरे लेखक हैं।
- स्वयं प्रकाश की कहानियों में वर्ग शोषण के विरुद्ध चेतना, सामाजिक जीवन में जाति, सम्प्रदाय और लिंग के आधार पर हो रहे भेदभाव के खिलाफ प्रतिकार का स्वर भी है।
- स्वयं प्रकाश की कहानियाँ रोचक किस्सागोई शैली में लिखी गई हैं।
- 'नेताजी का चश्मा' पाठ 'कहानी' विधा में लिखा गया है।
- 'नेताजी का चश्मा' कहानी कैप्टन चश्मे वाले के माध्यम से देश के करोड़ों नागरिकों के योगदान को रेखांकित करती है।
- हालदार साहब हर पंद्रहवें दिन कंपनी के काम के सिलसिले में कस्बे से गुजरते थे।
- 'नेताजी का चश्मा' कहानी का मूलभाव देश भक्ति की भावना है।
- चश्मे वाले का नाम कैप्टन था।
- कस्बे के चौराहे पर सुभाषचन्द्र बोस की प्रतिमा लगी थी।
- **नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की प्रतिमा (मूर्ति) नगर पालिका द्वारा लगवाई गई थी। (2022)**
- नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की प्रतिमा संगमरमर से बनी थी।
- सुभाषचन्द्र बोस की प्रतिमा (मूर्ति) को देखते ही 'दिल्ली चलो' और 'तुम मुझे खून दो.............' के नारे याद आने लगते थे।

- कैप्टन का काम चश्मे बेचने का था।
- हालदार साहब के चेहरे पर कौतुक भरी मुस्कान फैल गई।
- नेताजी की मूर्ति फौजी वर्दी में थी।
- **प्रतिमा बनाने वाले का नाम मोतीलाल था। (2023)**
- प्रतिमा पर सरकंडे का चश्मा बच्चों के द्वारा लगाया गया था।
- **नेताजी की मूर्ति दो फुट ऊँची थी। (2024)**
- नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की प्रतिमा बनाने वाले ड्राइंग मास्टर मोतीलाल थे।
- **नेताजी सुभाषचन्द्र की प्रतिमा पर चश्मा नहीं था। (2022)**
- चश्मे वाले की भक्ति के सामने हालदार साहब नतमस्तक थे।
- देशभक्तों के प्रति श्रद्धा व देशप्रेम के कारण सेनानी न होते हुए भी चश्मे वाले को कैप्टन कहते थे।

पाठ - 2

पाठ का नाम	लेखक का नाम	विधा का नाम
बाल गोबिन भगत	रामवृक्ष बेनीपुरी • जन्म सन्- 1899 • मृत्यु सन्- 1968	रेखाचित्र (गौण विद्या)

- रामवृक्ष बेनीपुरी का जन्म बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के बेनीपुर गाँव में हुआ था।
- रामवृक्ष बेनीपुरी ने दसवीं तक की शिक्षा प्राप्त करने के बाद वे सन् 1920 में राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन से जुड़ गए।
- 15 वर्ष की अवस्था में रामवृक्ष बेनीपुरी की रचनाएँ पत्र-पत्रिकाओं में छपने लगी।
- रामवृक्ष बेनीपुरी ने तरुण भारत, किसान मित्र, बालक, युवक, योगी, जनता, जनवाणी और नयी धारा आदि दैनिक, साप्ताहिक एवं मासिक पत्र-पत्रिकाओं का संपादन किया।
- रामवृक्ष बेनीपुरी का साहित्य 'बेनीपुरी रचनावली' के आठ खण्डों में प्रकाशित है।
- **रामवृक्ष बेनीपुरी की महत्त्वपूर्ण रचनाएँ- पतितों के देश में (उपन्यास), चिता के फूल (कहानी), अंबपाली (नाटक), माटी की मूरतें (रेखाचित्र) पैरों में पंख बाँधकर (यात्रा-वृत्तांत) जंजीरे और दीवारे (संस्मरण) आदि है। (2022)**
- **रामवृक्ष बेनीपुरी को विशिष्ट शैलीकार होने के कारण 'कलम का जादूगर' कहा जाता है। (2024)**
- बालगोबिन भगत रेखाचित्र सामाजिक रूढ़ियों पर प्रहार करता है।
- बालगोबिन भगत की मृत्यु का कारण बीमारी था।
- बालगोबिन भगत कबीरदास के आदर्शों पर चलते थे।

- बालगोबिन भगत का इकलौता बेटा सुस्त और बोदा था।
- बालगोबिन भगत अपनी जीविका खेतीबाड़ी करके चलाते थे।
- बालगोबिन भगत कबीर को साहब मानते थे और कबीर के ही पद गाते थे।
- बालगोबिन भगत गाते समय खँजड़ी बजाते थे।
- बालगोबिन भगत अपने खेतों में धान की रोपनी करते थे।
- बालगोबिन भगत मंझोले कद के गोरे-चिट्टे आदमी थे।
- बालगोबिन भगत कबीरपंथियों की-सी कनफटी टोपी एवं गले में तुलसी की जड़ों की बेडौल माला बांधे रहते थे।
- बालगोबिन भगत के मस्तक पर हमेशा रामानंदी चन्दन लगा रहता था।
- बालगोबिन भगत की प्रभातियाँ कार्तिक मास से शुरु होकर फागुन मास तक चलती थी।
- बालगोबिन भगत आत्मा और परमात्मा के बीच प्रेमी-प्रेमिका का सम्बन्ध मानते थे।
- **'कुहासा' शब्द का अर्थ कोहरा है। (2024)**
- पूर्व की ओर से बहने वाली हवा पुरवाई कहलाती है।
- 'निस्तब्धता' का शाब्दिक अर्थ सन्नाटा है।
- सवेरे किया जाने वाला जलपान 'कलेवा' कहलाता है।
- प्रात:काल की लालिमा लोही कहलाती है।
- **भगत की पुत्रवधु उन्हें अकेला नहीं छोड़ना चाहती थी क्योंकि इकलौते पुत्र की मृत्यु के बाद भगत की देखभाल करने वाला कोई न था। (2022) (2024)**
- **रामवृक्ष बेनीपुरी की भाषा सरल एवं व्यावहारिक हिन्दी है। भाषा में तत्सम एवं तद्भव के साथ अंग्रेजी एवं उर्दू के शब्दों का प्रयोग है। (2022)**

पाठ - 3

पाठ का नाम	लेखक का नाम	विधा का नाम
लखनवी अंदाज	यशपाल • जन्म सन्- 1903 • मृत्यु सन्- 1976	व्यंग्य विद्या (गौण विधा)

- यशपाल का जन्म सन् 1903 में पंजाब के फिरोजपुर छावनी में हुआ।
- यशपाल ने प्रारंभिक शिक्षा काँगड़ा में तथा बी.ए. शिक्षा लाहौर के नेशनल कॉलेज से प्राप्त की।
- लाहौर के नेशनल कॉलेज में यशपाल जी का परिचय भगत सिंह और सुखदेव से हुआ।

- यशपाल स्वाधीनता संग्राम की क्रांतिकारी धारा से जुड़ाव के कारण जेल भी गए।
- यशपाल की रचनाओं में आम आदमी के सरोकारों की झलक मिलती है तथा यशपाल यथार्थवादी शैली के विशिष्ट रचनाकार हैं।
- यशपाल के कहानी संग्रहों में ज्ञानदान, तर्क का तूफान, पिंजरे की उड़ान, वा दुलिया, फूलों का कुर्ता उल्लेखनीय हैं।
- **झूठा सच, अमिता, दिव्या, पार्टी कामरेड, दादा कामरेड, मेरी तेरी उसकी बात आदि यशपाल के प्रमुख उपन्यास हैं। (2023)**
- लखनऊ का बालमखीरा प्रसिद्ध है।
- लेखक यशपाल कनखियों से नवाब साहब की ओर देख रहे थे।
- लेखक यशपाल ने सेकण्ड क्लास ट्रेन का टिकट लिया।
- 'सफेदपोश' का शब्दिक अर्थ भद्र व्यक्ति होता है।

पाठ - 4

पाठ का नाम	लेखक का नाम	विधा का नाम
एक कहानी यह भी	मन्नू भंडारी • जन्म सन्- 1931 • मृत्यु सन्- 2021	आत्मकथा गौण विद्या

- **मन्नू भंडारी का जन्म गाँव भानपुरा, जिला मंदसौर (मध्य प्रदेश) में हुआ। (2022)**
- **हिन्दी कथा साहित्य की प्रमुख हस्ताक्षर मन्नू भंडारी की प्रमुख रचनाएँ -एक प्लेट सैलाब, मैं हार गई, यही सच है, त्रिशंकु (कहानी-संग्रह), आपका बंटी, महाभोज (उपन्यास) इत्यादि हैं। (2023)**
- मन्नू भंडारी ने फिल्म एवं टेलीविजन धारावाहिकों के लिए पटकथाएँ भी लिखी हैं।
- मन्नू भंडारी की रचनाओं में स्त्री मन से जुड़ी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति भी देखने को मिलती है।
- मन्नू भंडारी के आन्दोलनकारी व्यवहार से तंग आकर प्रिंसिपल ने उनके पिता को बुलाया।
- जैनेन्द्र का 'सुनीता' उपन्यास मन्नू भंडारी को बहुत अच्छा लगा।
- मन्नू भंडारी के पिता रसोई को भटियारखाना कहते थे।
- मन्नू भंडारी की बड़ी बहन का नाम सुशीला था। मन्नू भंडारी मूलत: एक कहानीकार हैं।
- शीला अग्रवाल मन्नू भंडारी की हिन्दी विषय की प्राध्यापिका थीं।
- मन्नू भंडारी का विवाह साहित्यकार राजेन्द्र यादव से हुआ था।
- भारत विभाजन की त्रासदी का मार्मिक दस्तावेज 'झूठा सच' उपन्यास को माना गया है।

- शताब्दी की सबसे बड़ी उपलब्धि थी- 15 अगस्त 1947 को देश का स्वतन्त्र होना।
- **मन्नू भण्डारी के व्यक्तित्त्व पर उनके पिता एवं हिन्दी प्राध्यापिका शीला अग्रवाल का प्रभाव पड़ा। (2023)**

पाठ - 5

पाठ का नाम	लेखक का नाम	विधा का नाम
नौबतखाने में इबादत	यतीन्द्र मिश्र • जन्म सन्- 1977	व्यक्ति चित्र गौण विद्या

- यतीन्द्र मिश्र का जन्म अयोध्या (उत्तर प्रदेश) में हुआ।
- यतीन्द्र मिश्र के तीन काव्य-संग्रह प्रकाशित हुए हैं- 'यदा-कदा', 'अयोध्या तथा अन्य कविताएँ', 'ड्योढ़ी पर आलाप'।
- यतीन्द्र मिश्र ने शास्त्रीय गायिका गिरिजा देवी के जीवन और संगीत साधना पर एक पुस्तक गिरिजा लिखी।
- 'नौबतखाने में इबादत' प्रसिद्ध शहनाई वादक उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ पर रोचक शैली में लिखा गया व्यक्ति-चित्र है।
- बिस्मिल्ला खाँ की 80 वर्ष की उम्र में साधना चलती रही।
- यतीन्द्र मिश्र संगीत की शास्त्रीय परम्परा के गहरे जानकर हैं।
- उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ शहनाई वादन के लिए प्रसिद्ध थे।
- बिस्मिल्ला खाँ का वास्तविक नाम अमीरुद्दीन था।
- अमीरूद्दीन का जन्म डुमराँव, बिहार के एक संगीत प्रेमी परिवार में हुआ था।
- शहनाई बजाने के लिए रीड का प्रयोग होता है और रीड अन्दर से पोली होती है।
- रीड, नरकट (एक प्रकार की घास) से बनाई जाती है जो सोन नदी के किनारे पाई जाती है।
- बिस्मिल्ला खाँ उस्ताद पैगंबरबख्श खाँ और मिट्ठन के छोटे साहबजादे हैं।
- अमीरूद्दीन के शहनाई गुरु अलीबख्श खाँ थे।
- बिस्मिल्ला खाँ की पंसदीदा हिरोइन सुलोचना थी।
- काशी संस्कृति की पाठशाला है।
- शास्त्रों में काशी आनंद कानन के नाम से विख्यात है।
- बिस्मिल्ला खाँ की अपार श्रद्धा काशी विश्वनाथ में थी।
- बिस्मिल्ला खाँ को भारत रत्न के सर्वश्रेष्ठ सम्मान से सम्मानित किया गया।
- पंचगंगा घाट काशी में स्थित है।
- काशी में मरण भी मंगल माना गया है।
- इस धरती पर शहनाई और काशी से बढ़कर कोई जन्नत नहीं है।

- काशी में संगीत आयोजन एक प्राचीन एवं अद्भुत परम्परा है।
- बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगलध्वनि का नायक माना गया है। शहनाई शुभ कार्यों में बजाई जाती है।
- शहनाई को 'सुषिर वाद्यों में शाह' की उपाधि दी गई है।
- फूँक कर बजाए जाने वाले सुषिर वाद्य यन्त्रों में बाँसुरी, शहनाई, नागस्वरम्, बीन है।
- आघात से बजाए जाने वाले धातु वाद्य यन्त्र में झाँझ, मंजीरा और घुँघरू हैं, जिन्हें घनवाद्य कहा जाता है।
- **चमड़े से मढ़े अवनद्ध वाद्यों में तबला, ढोलक, मृदंग आदि हैं। (2022)**
- **डुमराँव में भारतरत्न बिस्मिल्ला खाँ का जन्म हुआ तथा शहनाई को बजाने में काम आने वाली रीड के लिए घास भी डुमराँव में पाई जाती है। (2023)**
- **बिस्मिल्ला खाँ हिन्दू-मुस्लिम एकता के समर्थक थे। (2024)**

पाठ - 6

पाठ का नाम	लेखक का नाम	विधा का नाम
संस्कृति	भदंत आनंद कौसल्यायन • जन्म सन्- 1905 • मृत्यु सन्- 1988	निबन्ध प्रमुख विधा

- भदंत आनंद कौसल्यायन का जन्म पंजाब के अंबाला जिले के सोहाना गाँव में हुआ था।
- अनन्य हिन्दी सेवी कौसल्यायन जी बौद्ध भिक्षु थे, उन्होंने देश-विदेश की काफी यात्राएँ की तथा बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया।
- भदंत आनंद कौसल्यायन लम्बे अर्से तक वर्धा में रहे।
- भदंत आनंद कौसल्यायन की 20 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हैं।
- भदंत आनंद कौसल्यायन की प्रमुख रचनाएँ भिक्षु के पत्र, जो भूल न सका, आह! ऐसी दरिद्रता, बहानेबाजी, यदि बाबा न होते, रेल का टिकट, कहाँ क्या देखा आदि है।
- भंदत आनंद कौसल्यायन गाँधी जी के व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व से विशेष प्रभावित थे।
- संस्कृति निबंध हमें सभ्यता और संस्कृति से जुड़े अनेक जटिल प्रश्नों से टकराने की प्रेरणा देता है।
- लेखक भदंत आनंद कौसल्यायन ने सभ्यता को संस्कृति का परिणाम कहा है।
- 'संस्कृति' पाठ में न्यूटन को संस्कृत मानव कहा गया है।
- गुरुत्वाकर्षण का आविष्कार न्यूटन ने किया।
- मानव संस्कृति एक अविभाज्य वस्तु है।
- **एक संस्कृत व्यक्ति किसी नई चीज की खोज करता है। (2023)**
- आग के आविष्कार के पीछे पेट की ज्वाला की प्रेरणा रही होगी।
- भदंत आनंद कौसल्यायन के बचपन का नाम हरनाम दास था।

भाषा बोध

- अवधी भाषा आज उत्तर प्रदेश के अवध क्षेत्र के लखनऊ, रायबरेली, सुल्तानपुर आदि क्षेत्रों में बोली जाती है।
- दो व्यक्तियों के बीच की बातचीत या वार्तालाप संवाद कहलाता है।
- आत्मकथा में लेखक स्वयं जीवन-यात्रा (सम्पूर्ण जीवन का) वर्णन आत्मीयता से व्यवस्थित रूप से रखता है।
- **वाक्य में जब क्रिया अपना रूप बदलती है, कभी क्रिया कर्ता के अनुसार, कभी कर्म के अनुसार अपना रूप बनाती है, क्रिया का यही रूप वाच्य कहलाता है। (2022)**
- **वाच्य के तीन प्रकार होते हैं। (2022)**

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य	भाववाच्य
कर्तानुसार क्रिया का रूप परिवर्तन (1) कर्ता के लिंग, वचन पुरुष से प्रभावित	कर्म के अनुसार क्रिया का रूप परिवर्तन (2) कर्म में लिंग वचन के अनुसार क्रियाएँ रहती है।	भाव प्रधानता होने पर भाववाच्य कर्ता व कर्म की प्रधानता न होकर भाव की प्रधानता रहती है।

वाच्य-उदाहरण तालिका

कर्तृ वाच्य	कर्मवाच्य	भाववाच्य
मैं हँसता हूँ।	मेरे द्वारा हँसा जा रहा है।	मुझसे हँसा जाता है।
श्याम खाता है।	श्याम द्वारा खाया जा रहा है।	श्याम से खाया जाता है।
गिरीश चलता है।	गिरीश द्वारा चला जा रहा है।	गिरीश से चला जाता है।

- **प्रवंचना शब्द का शाब्दिक अर्थ धोखा है। (2022)**
- **दशानन में बहुव्रीहि समास है। (2022)**
- **अधिक बोलने वाला वाचाल होता है। (2022)**
- **'नाच न जाने आँगन टेढ़ा' लोकोक्ति है। (2022)**
- **समास छः प्रकार के होते हैं। (2022)**
- **'अब चला जाए' भाववाच्य वाक्य है। (2022)**

नाटक	कहानी
• नाटक में एक मुख्य कथा के साथ अनेक उपकथाएँ होती हैं। • नाटक में पात्रों की संख्या अधिक होती है।	• कहानी में एक ही मुख्य कथा होती है। • कहानी में पात्रों की संख्या कम होती है।

- **नौ दो ग्यारह होना- भाग जाना। (2022)**
  प्रयोग- बिल्ली को देख चूहे नौ दो ग्यारह हो गए हैं।
- **आँख का तारा - सबसे प्यारा होना। (2022)**
  प्रयोग- मोहन सबकी आँख का तारा है।
- **'प्रतिदिन' शब्द का समास विग्रह 'दिन दिन' है। (2022)**
  यह अव्ययीभाव समास का उदाहरण है।
- **'राजपुत्र' शब्द का समास विग्रह 'राजा का पुत्र' है। (2022)**
  यह षष्ठी तत्पुरुष समास का उदाहरण है।
- **सन्धि- समास में अन्तर है। (2022)**

• दो वर्णों के मेल से उत्पन्न विकार (परिवर्तन) को सन्धि कहते हैं। • विद्या + आलय = विद्यालय आ + आ = आ	• दो शब्दों के मेल से बने नये शब्दों को समास शब्द कहते हैं। • विद्या का आलय =विद्यालय घर =

- क्रिया की विशेषता का बोध कराने वाले शब्द क्रिया-विशेषण कहलाते हैं।
- क्रिया के विशेषण के चार प्रकार होते हैं।
  (1) कालवाचक, (2) स्थानवाचक, (3) रीतिवाचक, (4) परिमाणवाचक
- क्रिया के होने के समय का बोध होता है वे कालवाचक क्रिया विशेषण होते हैं।
- कालवाचक विशेषण शब्द ये हैं- अभी, अब, कल, परसों, कब, कभी, फिर, बाद, पीछे, कबका आदि।
- क्रिया के होने के स्थान/दिशा का बोध होता है वे स्थानवाचक क्रिया विशेषण होते हैं।
- स्थान वाचक विशेषण शब्द ये हैं- वहाँ, यहाँ, जहाँ, तहाँ तक, कहाँ तक, आगे, इधर, उधर, वहाँ, घर-घर आदि।
- रीतिवाचक क्रिया- विशेषण से क्रिया होने की रीति ढंग का बोध होता है।
- रीतिवाचक क्रिया- विशेषण शब्द ये हैं- धीरे-धीरे, ज्यों-त्यों, कैसे, ऐसे, वैसे, जैसे-तैसे अचानक आदि।
- परिमाण वाचक क्रियाविशेषण से परिमाण (मात्रा) का बोध होता है।
- परिमाण वाचक क्रिया-विशेषण के शब्द ये है- कम, अधिक, बहुत, थोड़ा, ज्यादा काफी, इतना, कितना, उतना, बिल्कुल आदि।
- **'वह धीरे-धीरे चलने लगा' यह वाक्य रीतिवाचक क्रिया- विशेषण है। (2023)**
- **संधि के तीन भेद होते हैं। (2023)**
- **गद्य की प्रमुख विधा निबंध है। (2023)**
- **'अंधे की लाठी' लोकोक्ति है। (2023)**
- **'एक अनार सौ बीमार' का अर्थ वस्तु की पूर्ति कम और माँग अधिक है। (2023)**

- **गद्य की तीन गौण विधाएँ संस्मरण, रिपोर्ताज एवं डायरी है। (2023)**
- **जो जीता न जा सके उसे अजेय कहते हैं। (2023)**
- **खून-पसीना एक करना- अधिक मेहनत करना। (2023)**
  प्रयोग- प्रावीण्य सूची में आने के लिए खून पसीना एक कर दिया।
- **दाल न गलना- वश न चलना। (2023)**
  प्रयोग-अदालत में उसकी तनिक भी दाल नहीं गलती।
- 'पंचवटी' का समास विग्रह पाँच वटों का समूह है।
  पंचवटी समास द्विगु समास का उदाहरण है। (2023)
- 'नीलाम्बर' का समास विग्रह 'नीला है जो वस्त्र' है।
  'नीलाम्बर' समास कर्मधारय समास का उदाहरण है। (2023)
- **कहानी-उपन्यास में अन्तर (2023)**

कहानी	उपन्यास
• कहानी का आकार लघु होता है। • जीवन के किसी एक अंश का चित्रण होता है।	• उपन्यास का आकार बड़ा होता है। • उपन्यास में जीवन का वृहद चित्रण होता है।

- **रेखाचित्र-संस्मरण में अन्तर (2023)**

रेखाचित्र	संस्मरण
• इसमें किसी व्यक्ति, वस्तु या घटना का चित्रात्मक अंकन होता है। • शब्द-चित्रों का महत्त्व होता है। • कल्पना का भी सहारा लिया जाता है।	• इसमें महान् व्यक्ति या घटना के संबंध में लिखा जाता है। • चिन्तन की गहराई होती है। • वास्तविकता के समीप होता है।

- **अर्थ की दृष्टि से वाक्य 8 प्रकार के होते हैं। (2024)**
- **एकांकी विधा एक अंकीय होती है। (2024)**
- **'रामचरितमानस' का मुख्य छंद चौपाई है। (2024)**
- **संस्मरण विधा में कल्पना तत्व की प्रधानता नहीं होती। (2024)**
- **कहानी के छ: तत्व होते हैं। (2024)**

गद्य की 4 प्रमुख विधाएँ	गद्य की 4 गौण विधाएँ
• उपन्यास • निबन्ध • कहानी • नाटक	• रिपोर्ताज • संस्मरण • डायरी • जीवनी

- बाबू गुलाबराय के अनुसार- “निबंध उस गद्य रचना को कहते हैं, जिसमें एक सीमित आकार के भीतर किसी विषय का वर्णन या प्रतिपादन एक विशेष निजीपन, स्वच्छन्दता सौष्ठव और सजीवता तथा आवश्यक संगति और सम्बद्धता के साथ किया गया हो।”
- नाटक - एकांकी में दो अंतर

नाटक	एकांकी में दो अंतर
• नाटक में जीवन का वृहद चित्रण होता है। • नाटक में कई अंक होते हैं।	• एकांकी में जीवन के खंड/अंश का चित्रण होता है। • एकांकी में एक अंक होता है।

- **हिन्दी का प्रथम उपन्यास ‘परीक्षा-गुरु’ को माना गया है। (2024)**

भाषा :-

- भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम भाषा है।
- भाषा के द्वारा हम विचारों का आदान-प्रदान करते हैं।
- भाषा की सबसे लघु इकाई वर्ण है।
- ध्वनि चिह्नों को वर्ण कहते हैं।
- वर्णो के सार्थक समूह को शब्द कहते हैं।

सन्धि :-

- संधि का शब्दार्थ मेल या योग है।
- दो या दो से अधिक वर्णों के मेल से जो विकार या परिवर्तन उत्पन्न होता है, उसे सन्धि कहते हैं।
- मिले हुए वर्णों को मूल रूप में अलग-अलग कर देना सन्धि- विच्छेद कहलाता है।

सन्धि के भेद :-

- सन्धि तीन प्रकार की होती है - (1) स्वर सन्धि, (2) व्यंजन सन्धि, (3) विसर्ग सन्धि।

स्वर सन्धि

- जब दो स्वर वर्णों के मेल से विकार या परिवर्तन होता है, तब स्वर सन्धि होती है।
- ‘शिवालय’ शब्द का सन्धि विच्छेद ‘शिव+आलय’ है। यह दीर्घ स्वर सन्धि का उदाहरण है।
- ‘विद्यालय’ शब्द का सन्धि विच्छेद ‘विद्या+आलय’ है, यह दीर्घ स्वर सन्धि का उदाहरण है।
- ‘कपीश’ शब्द का सन्धि विच्छेद ‘कपि+ईश’ है, यह दीर्घ स्वर सन्धि का उदाहरण है।
- ‘भानुदय’ शब्द का सन्धि विच्छेद ‘भानु+उदय’ है, यह दीर्घ स्वर सन्धि का उदाहरण है।
- ‘विद्यार्थी’ शब्द का सन्धि विच्छेद ‘विद्या+अर्थी’ है, यह दीर्घ स्वर सन्धि का उदाहरण है।
- ‘महर्षि’ शब्द का सन्धि विच्छेद है ‘महा+ऋर्षि’ है, यह गुण सन्धि का उदाहरण है।

- 'महेन्द्र' शब्द का सन्धि विच्छेद 'महा+इन्द्र' है, यह गुण सन्धि का उदाहरण है।
- 'सर्वोदय' शब्द का सन्धि विच्छेद 'सर्व+उदय' है, यह गुण सन्धि का उदाहरण है।
- 'परमेश्वर' शब्द का सन्धि विच्छेद 'परम+ईश्वर' है, यह गुण सन्धि का उदाहरण है।
- 'जितेन्द्रिय' शब्द का सन्धि विच्छेद 'जित+इन्द्रिय' है, यह गुण सन्धि का उदाहरण है।
- 'सदैव' शब्द का सन्धि विच्छेद 'सदा+एव' है, यह गुण सन्धि का उदाहरण है।
- 'महौषधि' शब्द का सन्धि विच्छेद 'महा+औषधि' है, यह वृद्धि सन्धि का उदाहरण है।
- 'प्रत्येक' शब्द का सन्धि विच्छेद 'प्रति+एक' है, यह यण सन्धि का उदाहरण है।
- 'अत्याचार' शब्द का सन्धि विच्छेद 'अति+आचार' है, यह यण सन्धि का उदाहरण है।
- 'इति+आदि' शब्द का सन्धि विच्छेद 'इत्यादि' है, यह यण सन्धि का उदाहरण है।
- 'नयन' शब्द का सन्धि विच्छेद 'ने+अन' है। इसमें अयादि सन्धि है।
- 'नायक' शब्द का सन्धि विच्छेद 'नै+अक' है। इसमें अयादि सन्धि है।
- 'नाविक' शब्द का सन्धि विच्छेद 'नौ+इक' है। इसमें अयादि सन्धि है।

व्यंजन सन्धि

- 'जगदीश' शब्द का सन्धि विच्छेद 'जगत्+ईश' है।
- 'दिगम्बर' शब्द का सन्धि विच्छेद 'दिक्+अम्बर' है।
- 'वागीश' शब्द का सन्धि विच्छेद 'वाक्+ईश' है।
- 'सज्जन' शब्द का सन्धि विच्छेद 'सत्+जन' है।

विसर्ग सन्धि

- 'निष्पाप' शब्द का सन्धि विच्छेद 'नि:+पाप' है।
- 'मनोयोग' शब्द का सन्धि विच्छेद 'मन:+योग' है।
- 'निस्सार' शब्द का सन्धि विच्छेद 'नि:+सार' है।
- 'निरक्षर' शब्द का सन्धि विच्छेद 'नि:+अक्षर' है।

समास

- समास का मूल अर्थ है 'संक्षेप'।
- दो या दो से अधिक शब्द मिलकर किसी नवीन शब्द की रचना करते हैं तो इस मिलने की क्रिया को समास कहते हैं।
- समास छ: प्रकार के होते हैं।

द्वन्द्व समास :- इस समास में दोनों पद प्रधान होते हैं परन्तु उनके संयोजक शब्द 'और' का लोप हो जाता है।

शब्द	समास-विग्रह	समास का नाम
गलत - सलत	गलत और सलत	द्वन्द्व समास
हिंदू - मुस्लिम	हिन्दू और मुस्लिम	द्वन्द्व समास
माता - पिता	माता और पिता	द्वन्द्व समास
भाई - बहन	भाई और बहन	द्वन्द्व समास
राजा - रानी	राजा और रानी	द्वन्द्व समास
रात - दिन	रात और दिन	द्वन्द्व समास
पाप - पुण्य	पाप और पुण्य	द्वन्द्व समास

- **द्विगु समास**:- जिस समास में प्रथम पद संख्यावाची होता है, वह द्विगु समास कहलाता है।

शब्द	समास-विग्रह	समास का नाम
त्रिफला	तीन फलों का समूह	द्विगु समास
सप्तर्षि	सात ऋषियों का समूह	द्विगु समास
नवग्रह	नौ ग्रहों का समूह	द्विगु समास
पंचतंत्र	पाँच तंत्रों का समूह	द्विगु समास
चौराहा	चार रास्तों का समूह	द्विगु समास
पंचवटी	पाँच वटों का समूह	द्विगु समास
सप्तद्वीप	सात द्वीपों का समूह	द्विगु समास

- **कर्मधारय समास:-** जिस समास में प्रथम पद विशेषण या उपमेय और दूसरा पद विशेष्य या उपमान हो, कर्मधारय समास कहते हैं।

शब्द	समास-विग्रह	समास का नाम
महामानव	महान है जो मानव	कर्मधारय समास
सुलोचना	सुन्दर लोचन हैं जिसके	कर्मधारय समास
महात्मा	महान है जो आत्मा	कर्मधारय समास
नीलगगन	नीला है जो गगन	कर्मधारय समास
पीताम्बर	पीला है जो वस्त्र	कर्मधारय समास
घनश्याम	घन के समान श्याम	कर्मधारय समास
नीलाम्बर (2023)	नीला है जो अम्बर	कर्मधारय समास

- **बहुब्रीहि समास** :- जिस समास में प्रथम एवं दूसरे पद के अतिरिक्त अन्य कोई पद प्रधान होता है, उसे बहुब्रीहि समास कहते हैं।

शब्द	समास-विग्रह	समास का नाम
दशानन	दस हैं आनन जिसके	बहुब्रीहि समास
चतुरभुज	चार भुजाओं वाला अर्थात् विष्णु	बहुब्रीहि समास
चक्रपाणि	जिसके हाथ में चक्र है अर्थात् विष्णु	बहुब्रीहि समास
लम्बोदर	लम्बा है उदर जिसका अर्थात् गणेश	बहुब्रीहि समास
नीलकण्ठ	नीला है कण्ठ जिसका अर्थात् शिव	बहुब्रीहि समास
गजानन	गज के समान मुख है जिसका अर्थात् गणेश	बहुब्रीहि समास
चतुरानन	चार है मुख जिसके अर्थात् ब्रह्मा	बहुब्रीहि समास

- **अव्ययी भाव समास** :- जिस समास में प्रथम पद अव्यय हो तथा वह पद ही प्रधान हो, वहाँ अव्ययीभाव समास होता है।

शब्द	समास-विग्रह	समास का नाम
यथोचित	जो उचित हो	अव्ययी समास
प्रतिदिन	प्रत्येक दिन	अव्ययी समास
यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार	अव्ययी समास
आजीवन	जीवन भर	अव्ययी समास
यथायोग्य	योग्यता के अनुसार	अव्ययी समास
आजन्म	जन्म से लेकर	अव्ययी समास
यथासमय	समय के अनुसार	अव्ययी समास

- **तत्पुरुष समास**:- जिस समास में उत्तर पद प्रधान होता है तथा पूर्वपद के कारक (विभक्ति) का लोप करके दोनो पदों को मिला दिया जाता है, वहाँ तत्पुरुष समास होता है।

शब्द	समास-विग्रह	समास का नाम
आत्म-विनाश	आत्मा का विनाश	तत्पुरुष समास
पद दलित	पद से दलित	तत्पुरुष समास
राजपुत्र	राजा का पुत्र	तत्पुरुष समास
शरणागत	शरण को आया हुआ	तत्पुरुष समास
जन्मान्ध	जन्म से अंधा	तत्पुरुष समास
रसोईघर	रसोई के लिए घर	तत्पुरुष समास
पथभ्रष्ट	पथ से भ्रष्ट	तत्पुरुष समास

- सन्धि और समास में अन्तर

सन्धि	समास
• सन्धि तीन प्रकार की होती हैं।	• समास छः प्रकार के होते हैं।
• सन्धि का अर्थ होता है योग या मेल।	• समास का अर्थ है- संक्षेप।
• सन्धि में दो वर्णों का मेल होता है।	• समास में दो शब्द या पदों का मेल होता है।

शब्द शक्ति

- **परिभाषा** :- शब्द के अर्थ का बोध कराने वाली शक्ति ही शब्दशक्ति कहलाती है।
- शब्दशक्ति तीन प्रकार की होते हैं।

  अ. अभिधा ब. लक्षणा स. व्यंजना

अ. अभिधा - अभिधा का अर्थ किसी शब्द का साधारण अर्थ है।

उदाहरण- राम पानी पीता है।

ब. लक्षणा - जिस शक्ति से मुख्य अर्थ से सम्बंध रखने वाला अन्य अर्थ प्रकट होता है वह लक्षणा शब्द शक्ति कहलाती है।

उदाहरण - लड़का शेर है।

स. व्यंजना - जब किसी शब्द का अर्थ मुख्यार्थ या लक्ष्यार्थ से अलग होकर, वाक्य के सन्दर्भ के अनुसार अलग-अलग अर्थ या व्यंग्यार्थ में प्रकट हो, वहाँ व्यंजना शब्द शक्ति का प्रयोग होता है।

उदाहरण - रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून। पानी गए न ऊबरे, मोती मानुष चून॥

काव्य बोध

- **करुण रस का स्थायी भाव शोक है। (2022)**
- **प्रत्येक चरण में 16-16 मात्राएँ चौपाई छन्द में होती है (2022)**
- **'मूरत मधुर मनोहर देखी' पंक्ति में अनुप्रास अलंकार है। (2022)**
- **सोरठा छन्द में चार चरण होते हैं। (2022)**
- **उपमा अलंकार के चार अंग होते हैं। (2022)**
- **महाकाव्य-खण्डकाव्य में अन्तर (2022)**

महाकाव्य	खण्डकाव्य
• सम्पूर्ण जीवन का उल्लेख होता है।	• जीवन के किसी एक पक्ष का उल्लेख होता है।
• महाकाव्य विस्तृत होता है।	• खण्डकाव्य संक्षिप्त होता है।

- **आचार्य विश्वनाथ के अनुसार काव्य की परिभाषा इस प्रकार है - 'रसात्मकं वाक्यं काव्यम् ' अर्थात् रस युक्त वाक्य ही काव्य है। (2024)**
- **जहाँ एक ही वर्ण की आवृत्ति होती है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है। (2024)**

- **सहृदय (व्यक्ति) के हृदय में जब हास (हँसी) का भाव उत्पन्न होता है वहाँ हास्य रस होता है। (2024)**
- **'भूषण' रीतिकालीन कवि थे। (2023)**
- **'दसवे' रस का नाम वात्सल्य है। (2023)**
- **प्रबन्ध काव्य के 2 भेद होते हैं। (2023)**
- **मानवी क्रियाओं का आरोप मानवीकरण अलंकार है। (2023)**
- **रस के 4 अंग होते हैं। (2023)**
- **दोहा एक सममात्रिक छंन्द नहीं है। (2023)**

अलंकार- पाठ 2

- बालकु बोलि बधों नहि तोहि- पंक्ति में अनुप्रास अलंकार है।
- कोटि कुलिस सम वचनु तुम्हारा- पंक्ति में अनुप्रास व उपमा अलंकार दोनों ही हैं।
- दोहा मात्रिक छन्द का प्रकार है, इसमें 24 मात्राएँ, चार चरण तथा 13-11 मात्रा पर यति होती है।
- **चौपाई मात्रिक छन्द का प्रकार है, इसमें चार चरण तथा प्रत्येक चरण में 16-16 मात्राएँ होती हैं। (2023)**
- शब्द के जिस व्यापार (व्यक्त) से मुख्य अर्थ तथा लक्ष्य अर्थ से अलग अर्थ का बोध होता है, उसे व्यंजना शब्द शक्ति कहते हैं।
- अभिधा शब्द शक्ति वह होती हैं जिसमें सामान्य शब्दार्थ की जानकारी हो जाती है।
- लक्षणा शब्द शक्ति से शब्द के मुहावरेदार अथवा आलंकारिक अर्थ का ज्ञान होता है।
- पाठ राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद में 'सहस बाहु सम सो रिपु मोरा' पंक्ति में उपमा अलंकार है।
- जहाँ निर्जीव वस्तुओं को मानव के समान प्रस्तुत किया जाता है, वहाँ मानवीकरण अलंकार होता है।
- **जहाँ एक ही शब्द का समान अर्थ में एक से अधिक बार प्रयोग होता है वहाँ पुनरूक्ति प्रकाश अलंकार होता है। (2024)**
- **जहाँ कोई बात आवश्यकता से अधिक बढ़ा-चढ़ाकर कही जाए, वहाँ अतिश्योक्ति अलंकार होता है। (2022)**
- **जहाँ अप्रस्तुत कथन के द्वारा प्रस्तुत अर्थ का बोध कराया जाए वहाँ अन्योक्ति अलंकार होता है। (2023)**
- प्रयोगवादी काव्य में नये उपमानों का प्रयोग किया है, इस काव्य में बुद्धि की प्रधानता व मुक्त छंदों का प्रयोग है।
- प्रगतिवादी काव्य में शोषितों से सहानुभूति दिखाई गयी है तथा ईश्वर के प्रति अनास्था का भाव भी समाहित है।
- रीतिकाल में अनुभूति की गहराई, प्रबलता व विरह वेदना की सरस अभिव्यक्ति में हुई है।
- नई कविता में कवियों ने लघुमानवतावाद की प्रतिष्ठा व क्षणवाद के महत्त्व, जीवन के प्रत्येक क्षण के महत्त्व को माना है।

अलंकार के उदाहरण

मानवीकरण	पुनरूक्ति प्रकाश
• 'प्यारे जागते हुए हारे सब तारे तुम्हें जागो एक बार।'	• 'पुनि पुनि मुनि उकसहिं अकुलाही'
अतिश्योक्ति	**अन्मोक्ति अलंकार**
• 'हनुमान की पूँछ में लगन न पाई आग लंका सारी जरि गई, गये निसाचर भाग'	• माली आवत देखकर कलियन करि पुकार फूले-फूले चुनि लिए, कालि हमारी बार

विशेषताएँ

रीतिकाल	प्रयोगवाद
• अनुभूति की गहराई • विरह वेदना	• निराशावाद की प्रधानता है • मुक्त छंदों का चयन
प्रगतिवाद	**नई कविता**
• प्रगतिवाद प्रतीकों का प्रयोग • सामाजिक यथार्थ का चित्रण	• लघुवाद की प्रतिष्ठा • नए बिम्बों की खोज

- आधुनिक काल के प्रमुख कवि व उनकी रचनाएँ

प्रगतिवाद	प्रयोगवाद
• नागार्जुन- 'युगधारा' • त्रिलोचन- 'धरती'	• अज्ञेय- 'हरी घास पर क्षण भर' • मुक्तिबोध- 'चाँद का मुँह टेढ़ा हैं।'
रीतिकाल	**नई कविता**
• केशवदास - 'कविप्रिया' • बिहारी - बिहारी सतसई	• भवानी प्रसाद मिश्र - 'सन्नाटा' • नरेश मेहता - 'उत्सव'

- आधुनिक काल विभाजन

युग का नाम	समयावधि	प्रमुख कवि
• भारतेन्दु युग	• सन् 1850 से 1900 तक	• भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
• द्विवेदी युग	• सन् 1900 से 1920 तक	• अयोध्यासिंह हरिऔध
• छायावादी युग	• सन् 1920 से 1936 तक	• जयशंकर प्रसाद
• प्रगतिवादी युग	• सन् 1936 से 1943 तक	• रामधारीसिंह 'दिनकर'
• प्रयोगवादी युग	• सन् 1943 से 1950 तक	• अज्ञेय
• नई कविता	• सन् 1950 से आज तक	• भवानी प्रसाद मिश्र

- हिन्दी पद्य साहित्य का इतिहास

क्रम	काल विभाजन	समय सीमा
1	आदिकाल (वीरगाथा काल)	सन् 993 ई. से सन् 1318 तक
2	भक्तिकाल (पूर्वमध्यकाल)	सन् 1318 ई. से सन् 1643 तक
3	रीतिकाल (उत्तर मध्यकाल)	सन् 1643 ई. से सन् 1843 तक
4	आधुनिक काल (वर्तमान काल)	सन् 1843 ई. से निरन्तर

- **सहृदय (व्यक्त) के हृदय में या नायक-नायिका के मन में प्रेम उत्पन्न होता है तब शृंगार रस होता है। (2023)**
- **प्रगतिवादी कवि हैं- मुक्तिबोध। (2024)**
- **आधुनिक हिन्दी कविता का आरम्भ संवत् 1900 से माना जाता है। (2024)**
- **छन्द के 2 प्रकार हैं- (मात्रिक छन्द, वर्णिक छन्द) (2024)**
- **दोहा छन्द की प्रथम एवं तृतीय पंक्ति में 13-13 मात्राएँ होती हैं। (2024)**

कृतिका भाग-2

विषय-क्रम

स.क्र.	पाठ का नाम	लेखक का नाम	विधा
1	माता का अंचल	शिवपूजन सहाय	कहानी
2	साना-साना हाथ जोड़ि	मधु कांकरिया	यात्रा वृत्तान्त
3	मैं क्यों लिखता हूँ?	अज्ञेय	निबन्ध

कृतिका भाग - 2

पाठ का नाम	लेखक का नाम	विधा का नाम
माता का अंचल	शिवपूजन सहाय	कहानी प्रमुख विधा

- शिवपूजन सहाय का जन्म गाँव उनवाँस जिला भोजपुर (बिहार) में हुआ था।
- शिवपूजन सहाय के बचपन का नाम भोलानाथ था।
- शिवपूजन रचनावली के चार खण्डों में शिवपूजन सहाय की सम्पूर्ण रचनाएँ प्रकाशित हैं।
- 'देहाती दुनिया' उपन्यास के लेखक शिवपूजन सहाय हैं।
- **भोलानाथ का असल नाम तारकेश्वरनाथ था। (2022)**
- अमनियाँ का अर्थ है- साफ करना।
- साँप निकलने पर डरकर भागे भोलानाथ मइयाँ के अँचल में छिपे।
- **भोलानाथ अपने साथियों को देखकर सिसकना भूल जाते थे। क्योंकि बालकों का सहज स्वभाव होता है कि वे साथियों की शरारत व मस्ती देखकर सब भूल जाते हैं। (2022)**
- भोलानाथ के पिता उन्हें फूल के कटोरे में गोरस भात खिलाते थे।
- 'माता का अँचल' पाठ में दो लड़के मिलकर मोट खींचते हैं।
- भोलानाथ के पिता शिवजी के भक्त थे।
- 'माता का अँचल' पाठ में बाबूजी सुबह-सुबह रामायण का पाठ करते थे।
- शिवपूजन सहाय मुख्यत: गद्य के लेखक हैं।
- **भोलानाथ पूजा के समय मस्तक पर भभूत का तिलक लगाते थे। (2023)**
- भोलानाथ और उनके पिताजी कभी-कभी कुश्ती भी लड़ते थे।
- भोलानाथ और उनके साथी चूहों के बिल से पानी उलीचने लगे।
- लड़के और बन्दर पराई पीर नहीं समझते।
- भोलानाथ के पिता 'रामनामा बही' में हजार बार राम-राम लिखते थे।
- **भोलानाथ के पिता आटे की 500 गोलियाँ मछलियों को खिलाते थे। (2023)**
- भोलानाथ और उसके साथी अमोले को घिसकर शहनाई बजाते थे।
- बरखा के बन्द होते ही बाग में बहुत से बिच्छू नजर आए।
- विपदा के समय भोलानाथ मइयाँ के अँचल में जाकर छिप जाता है।
- भोलानाथ अपने पिताजी को 'बाबूजी' और माता को 'मइयाँ' कहकर पुकारते थे।
- बचपन में भोलानाथ का अधिकांश समय अपने पिता के सानिध्य में गुजरता था।
- भोलानाथ और उनके हम उम्र चबूतरे के एक कोने को नाटक घर बना देते थे।

- भोलानाथ के बाबूजी की नहाने वाली चौकी रंगमंच बनाने के काम आती थी।
- भोलानाथ व उनके साथी अपने घरौंदे के किवाड़ (दरवाजे) दियासलाई की डिबिया से बनाते थे।
- भोलानाथ व उनके साथी टूटी चूहेदानी से पालकी बनाते थे।
- आम के उगते हुए पौधे को 'अमोला' कहते हैं।
- मकई के खेत में चिड़ियों का झुण्ड चर रहा था।
- **भोलानाथ जैसे बच्चों को वस्तुएँ सुलभता से व बिना मूल्य खर्च किए ही प्राप्त हो जाती है परंतु आज के बच्चों की खेल सामग्री मूल्य खर्च करने पर ही प्राप्त होती है। (2023)**
- **हिन्दी का प्रथम उपन्यास लाला श्रीनिवास दास जी का 'परीक्षा गुरु' है। (2024)**

कृतिका भाग - 2

पाठ का नाम	साना-साना हाथ जोड़ि
लेखिका	मधु कांकरिया, जन्म-1957
रचनाएँ	पत्ताखोर (उपन्यास), सलाम आखिरी, खुले गगन के लाल सितारे, अंत में ईशु (कहानी-संग्रह)
विधा	यात्रा वृत्तांत

- सिक्किम राज्य की राजधानी गंतोक है।
- 'साना-साना हाथ जोड़ि.' में हिमालय यात्रा का वर्णन है।
- गैंगटॉक (गंतोक) का अर्थ है- पहाड़।
- **'साना-साना हाथ जोड़ि..' का अर्थ है छोटे-छोटे हाथ जोड़कर प्रार्थना करना। (2024)**
- **हिमालय की तीसरी सबसे बड़ी चोटी 'कंचनजंघा' है। (2023)**
- गैंगटॉक से 149 किलोमीटर की दूरी पर यूमथांग था।
- लेखिका मधु कांकरिया के ड्राइवर-कम-गाइड का नाम जितेन नार्गे था।
- सफेद-सफेद बौद्ध पताकाएँ शांति और अहिंसा का प्रतीक हैं।
- बुद्धिस्ट की मृत्यु होने पर 108 श्वेत पताकाएँ फहरा दी जाती हैं।
- नए कार्य की शुरुआत के लिए रंगीन पताकाएँ लगा दी जाती हैं।
- 'कवी-लोंग स्टॉक' में 'गाइड' फिल्म की शूटिंग हुई।
- **'प्रेयर-व्हील' को घुमाने से सारे पाप धुल जाते हैं, इसे धर्म-चक्र भी कहते हैं। (2023)**
- सिलीगुड़ी से हमारे साथ थी- 'तिस्ता नदी'।
- शिखर से गिरता वाटर फॉल- 'सेवन सिस्टर्स वाटर फाल' नाम था।

- यूमथांग की घाटियों में प्रियुता और रूडोडेंड्रों के फूल खिलते हैं।
- लेखिका ने गंगटोक को 'मेहनतकश बादशाहों का शहर' कहा है।
- मणि ने पहाड़ी कुत्तों की विशेषता बताई कि ये केवल चाँदनी रात में ही भौंकते हैं।
- जितेन ने देवी-देवताओं के निवास वाली जगह का नाम खेदुम बताया।
- लेखिका मधु कांकरिया ने 'साना-साना हाथ जोड़ि ..' प्रार्थना के बोल एक नेपाली युवती से सीखे।
- पहाड़ी इलाके का जीवन कठोर है।
- चाय के हरे-हरे बागानों में कई युवतियाँ बोकु (सिक्किमी परिधान) पहने चाय की पत्तियाँ तोड़ रही थी।
- लायुंग में लेखिका तिस्ता नदी के तीर पर बसे लकड़ी के एक छोटे से घर में ठहरीं।
- लायुंग में अधिकतर लोगों की जीविका का साधन पहाड़ी आलू, धान की खेती और दारू का व्यापार है।
- 'कटाओ' यानी भारत का स्विट्जरलैंड है।
- 'कटाओ' लायुंग से 500 फीट ऊँचाई पर था।
- मिल्टन ने ईव की सुंदरता का वर्णन करते हुए लिखा था कि शैतान भी उसे देखकर ठगा-सा रह जाता था और दूसरों का अमंगल करने की वृत्ति भूल जाता था।
- 'फेरी भेटुला' का अर्थ होता है 'फिर मिलेंगे'।
- 'मंजिल' से कहीं ज्यादा रोमांचक होता है मंजिल तक का सफर।
- जब सिक्किम स्वतंत्र रजवाड़ा था तब टूरिस्ट उद्योग वहाँ इतना फला-फूला नहीं था।
- **कटाओ में बर्फ से ढके पहाड़ चाँदी की तरह चमक रहे थे। (2023)**
- **पर्वतीय सुन्दरता मन को भाती है। (2024)**
- सिक्किम के लोगों का विश्वास है कि गंदगी फैलाने से मृत्यु हो जाती है।
- कटाओ से आगे बढ़ने पर लेखिका को इक्की-दुक्की फौजी छावनियाँ दिखाई दीं।
- 'कटाओ' जाने का मार्ग दुर्गम है।
- हिमपात का आनंद लेने की आशा से लेखिका लाचुंग पहुँची थी।
- रहस्यमयी तारों भरी रात लेखिका मधु कांकरिया के मन में सम्मोहन जगा रही थी।
- लायुंग की सुबह बेहद शांत और सुरम्य थी।
- भारतीय आर्मी के कप्तान शेखर दत्ता ने यूमथांग को टूरिस्ट स्पॉट बनाने में सहयोग दिया।
- खेदुम का एरिया लगभग एक किलोमीटर का है।
- 'रकम-रकम' का अर्थ है- 'तरह-तरह'।
- 'कवी-लोंग स्टॉक' में तिब्बत के 'चीस-खे बम्सन' ने लेपचाओं के शोमेन से कुंजतेक के साथ संधि-पत्र पर हस्ताक्षर किए थे।

- 'कवी-लोंग स्टॉक' में एक पत्थर स्मारक के रूप में है यह स्मारक पत्थर सिक्किम की स्थानीय जातियों के बीच झगड़ों के बाद शांति वार्ता की शुरुआत स्थल है।
- डोको का अर्थ है- बड़ी टोकरी।
- पहाड़ों पर रास्ता बनाना बड़ा दुसाध्य कार्य है।
- लेखिका ने एक बार पलामू और गुमला के जंगलों में पीठ पर बच्चे को कपड़े में बाँधकर पत्तों की तलाश में वन-वन डोलती आदिवासी युवतियों को देखा।
- गंतोक एक पर्वतीय स्थल है। पर्वतीय क्षेत्र होने के नाते यहाँ की स्थितियाँ बड़ी कठिन हैं। अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए लोगों को कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। यहाँ के लोग मेहनत करने से घबराते नहीं ऐसी कठिनाइयों के बीच भी मस्त रहते हैं। इसलिए गंतोक को 'मेहनतकश ' बादशाहों का शहर कहा गया है।

कृतिका भाग - 2

पाठ का नाम	लेखक का नाम	विधा का नाम
मैं क्यों लिखता हूँ ?	• सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'	निबंध

- 'अज्ञेय' का जन्म सन् 1911 में उ.प्र. के देवरिया जिले में हुआ।
- क्रांतिकारी आंदोलन में भाग लेने के कारण अज्ञेय को जेल जाना पड़ा।
- अज्ञेय द्वारा संपादित तार सप्तक है।
- रचनाकार की भीतरी विवशता ही उसे लेखन के लिए मजबूर करती है।
- प्रत्यक्ष अनुभव जब अनुभूति का रूप धारण करती है तभी रचना होती है।
- अनुभव के बिना अनुभूति नहीं होती।
- 'मैं क्यों लिखता हूँ ?' यह प्रश्न बड़ा कठिन है।
- लिखकर ही लेखक उसकी अभ्यांतर विवशता को पहचानता है।
- 'उन्मेष' का अर्थ होता है - प्रकाश, दीप्ति।
- लेखक अज्ञेय विज्ञान विषय के विद्यार्थी रहे हैं।
- **हिरोशिमा में अणु-बम गिरा था। (2023), (2022)**
- सैनिक ब्रह्मपुत्र में बम फेंक कर हजारों मछलियाँ मार देते थे।
- लेखक अज्ञेय ने हिरोशिमा के अस्पताल में देखा कि रेडियम-पदार्थ से आहत लोग वर्षों से कष्ट पा रहे हैं।
- लेखक अज्ञेय ने घूमते हुए देखा कि एक जले हुए पत्थर पर एक लम्बी उजली छाया है।
- लेखक ने हिरोशिमा नामक कविता रेलगाड़ी में बैठे-बैठे लिखी।
- सन् 1959 में 'अरी ओ करुणा प्रभामय' काव्य-संग्रह में अज्ञेय की 'हिरोशिमा' कविता प्रकाशित हुई।

- लेखन में कृतिकार के स्वभाव और आत्मानुशासन का महत्त्व है।
- **अज्ञेय ने हिरोशिमा कविता भारत लौटकर लिखी। (2024 पूरक)**
- हिरोशिमा जापान में है।
- अज्ञेय ने एटम बम को 'मानव निर्मित सूरज' कहा है।
- जापान यात्रा के दौरान जब लेखक अज्ञेय ने पत्थर में मानव की उजली छाया देखी तब अपने आपको हिरोशिमा के विस्फोट का भोक्ता महसूस किया।
- लेखक अज्ञेय कभी बाहरी दबाव के कारण, कभी भीतरी विवशता के कारण, कभी संपादकों के आग्रह से, कभी प्रकाशकों के कारण, कभी आर्थिक आवश्यकता के कारण लिखते हैं।
- हिरोशिमा पर अणु बम 6 अगस्त, 1945 को फेंका गया।